International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 04-07
www.educationjournal.info
Received: 03-11-2022
Accepted: 05-12-2022

डॉ. विधान कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, चन्द्रशेखर शिक्षा महाविद्यालय, बगहा जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विधान कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, चन्द्रशेखर शिक्षा महाविद्यालय, बगहा जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत

प्रयागराज जनपद में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. विधान कुमार शुक्ला

सारांश
व्यक्तित्व में ऐसे गुणों या विशेषकों का समावेश होता है जो अधिकांशतः अर्जित हुआ करते हैं। एक परिपक्व व्यक्तित्व बनने की अवस्था तक पहुँचने में अधिगम का योगदान इस सीमा तक होता है कि व्यक्तित्व तथा अधिगम सम्बन्धी गुणों का विभेद करना मुश्किल हो जाता है। इस प्रकार व्यक्तित्व के निर्माण में अधिगम का विशेष महत्त्व होता है। प्रस्तुत शोध पत्र प्रयागराज जनपद में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध के निष्कर्ष यह बताते है कि शोध क्षेत्र के उत्तरदाताओं का 49.67 प्रतिशत मत है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है। बच्चों के प्रकृति–प्रदत्त गुणों को मुखारित करना, उनके नैतिक गुणों को पहचानना और संवारना, उन्हें सच्चे ईमानदार और उच्च आदर्शो के प्रति निष्ठावान नागरिक बनाना शिक्षक का ध्येय है।

कूट शब्दः प्रयागराज जनपद, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, व्यक्तित्व, विकास, समीक्षात्मक, अध्ययन।

प्रस्तावना
प्राचीन काल से आज तक शिक्षक को समाज के आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा जाता है। प्रारम्भ में वह ब्रह्मा–विष्णु तो कालान्तर में धर्मगुरु बन गया। यह तो निश्चित ही है कि बालक के व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की अद्वितीय भूमिका है। मनोविज्ञान के प्रभाव ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बना दिया है। ऐसे में आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक, शिक्षक होने के साथ–साथ अभिभावक, नेता, निर्देशक, सहयोगी, सलाहकार तथा निष्पक्ष निर्णायक आदि अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करता है। आज शिक्षक अनेक प्रकार से बालकों का सहयोग करता है। भौतिक युग की कृत्रिमता, यांत्रिकता ने भारतीय परिवेश को परिवर्तित एवं परिवर्तनशील बना दिया है। समय के साथ–साथ नए–नए प्रयोगों और दृष्टिकोणों ने हर व्यवसाय एवं पद के स्वरुप को बदल दिया है। अब कोई भी कार्य अपने प्राचीन तौर–तरीकों से करना असंभव सा हो गया है। जब ऐसा परिवर्तन समाज में आता है, तब समाज के शिक्षित, सुशिक्षित वर्ग का दायित्व और भी बढ़ जाता है। दायित्वों का भार उसे अधिक संयमित होकर निभाना पड़ता है। यह बात शिक्षक वर्ग पर अधिक लागू होती है। समाज का निर्माता, राष्ट्र का मार्गदर्शक, स्वस्थ परंपराओं के नियामक शिक्षक को और भी अधिक सावधान होने की जरूरत पड़ती है।
व्यक्तित्व – विकास में वंशानुक्रम तथा परिवेश दो प्रधान तत्व हैं। वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है। परिवेश उसे इन शक्तियों को सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। बालक के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है। ज्यों–ज्यों बालक बिकसित होता जाता है, वह उस समाज या समुदाय की शैली को आत्मसात् कर लेता है, जिसमें वह बड़ा होता है, व्यक्तित्व पर गहरी छाप छोड़ते हैं।
व्यक्तित्व की संरचना अनेक शीलगुणों से मिलकर बनी होती है। यद्यपि इनका विकास अधिगम एवं अनुभूतियों पर निर्भर होता है। शीलगुण से तात्पर्य व्यवहार की विशेषता या समायोजन के प्रतिमान से है। जैसे संवेगात्मक स्थिरता, आक्रामकता, दयालुता, सहिष्णुता, विश्वसनीय आदि गुण विशिष्टि होता है, कुछ समान होते है तथा एक दूसरे से सम्बन्धित होते है। शीलगुण संलक्षण निर्मित होता है। जैसे शांत, एकान्तप्रिय, संकोची एवं दब्बू होने पर व्यक्ति को अन्तर्मुखी कहा जाता है। इसी प्रकार अनेक संलक्षणों की रचना हो सकती है। किसी व्यक्ति में जिन गुणों में प्रभुत्व एवं स्थायित्व की स्थिति पायी जाती है, उन्हें ही व्यक्तित्व का शीलगुण समझना चाहिए। शीलगुणों में भिन्नता के परिणामस्वरूप हम बालकों के व्यक्तित्व को भिन्न–भिन्न रूपों में प्रत्यक्षित करते हैं। इस प्रकार सभी बालकों के व्यवहार में अलग–अलग शीलगुणों का स्थायित्व प्रदर्शित होता है।
व्यक्तित्व संरूपों के स्थायी संगठन में 'स्व' की भूमिका प्रमुख होती है। यदि 'स्व' की वस्तुस्थिति में परिवर्तन होता है तो प्रतिमानों का स्वरूप भी परिवर्तित होता है। यदि स्वयं के बारे में बच्चे द्वन्द्व का अनुभव करते हैं तो संरूप के संगठन में स्थायित्व नहीं आ पाता।
जैसे – माता–पिता बच्चे को अच्छा कहते हैं परन्तु मित्रमंडली अस्वीकार करती है।

इस प्रकार 'वास्तविक स्व' एवं आदर्शात्मक स्व' में अधिक विसंगति होती है। कैटेल एवं ड्रिगल (1974) के अनुसार यदि बालक स्वयं को सुयोग्य समझता है तो उसका समायोजन यथोचित ढंग से होता है, परन्तु उसके मन में निषेधात्मक भावनाएँ उत्पन्न होने उसमें व्यक्तिगत तथा सामाजिक समायोजन की समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं।

आलपोर्ट के अनुसार, "व्यक्तित्व के अन्दर उन मनोदैहिक संस्थाओं का वह गत्यामक संगठन है जो कि उसके वातावरण के प्रति होने वाले अनोखे समयोजन का निर्धारण करता है।"

गिलफर्ड के अनुसार, "व्यक्ति के विशेषकों के विलक्षण स्वरूप को उसका व्यक्तित्व माना जाता है।"

सामाजिक न्याय तथा समानता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि वंचित एवं सम्पन्न वर्गों के बीच खाई को शीघ्रातिशीघ्र कम कर दिया जाये। शिक्षा इस कार्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सामाजिक न्याय तथा समानता की दृष्टि से भी यह अत्यन्त आवश्यक है कि शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता एवं उसके वास्तविक उपभोग में दृष्टिगोचर होने वाली असमानता को दूर करके सभी क्षेत्रों (ग्रामीण एवं शहरी) के छात्रों को शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर उपलब्ध कराये जायें।

परिवार की आर्थिक स्थिति का व्यक्तित्व पर एक विशेष सीमा तक बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव पड ता है। यह देखा गया है कि अत्यधिक गरीबी में पले बच्चों में हीनता और असुरक्षा की भावनाएं अपेक्षाकृत अधिक देखने को मिलती है। बहुधा गरीब परिवारों में बच्चों के लिये पौष्टिक भोजन और विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का अभाव होता है। जिससे इन बच्चों का शारीरिक विकास भी प्रभावित होता है। साथ ही गरीबी के तनावपूर्ण वातावरण का प्रभाव बच्चों के मानसिक विकास और व्यक्तित्व पर भी पड़ता है।

शिक्षा जैसी अनमोल वस्तु को विद्यार्थियों तक पहुँचानें में शिक्षक एक सेतु की भूमिका निभाते है। भारत में शिक्षा को प्राथमिकता पर रखते हुए उसके प्रसार के लिए शासन द्वारा कई योजनाऐं विद्यायालीन पर संचालित की जा रही है।

शोध अध्ययन का महत्व

व्यक्तित्व के विकास पर माता–पिता का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यदि शिशु को माता–पिता से पर्याप्त स्नेह मिलता है तो उसका व्यक्तित्व भी स्वस्थ और स्नेहपूर्ण होता है। व्यक्तित्व के विकास पर घर के वातावरण का प्रभाव भी पड़ता है। जिस घर में माता–पिता के आपसी सम्बन्ध अच्छे होते हैं उन बालकों का स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व अच्छा पाया जाता है। बालक के व्यक्तित्व पर औपचारिक एवं अनौपचारिक संस्थान भी प्रभाव डालते हैं। अनौपचारिक संस्थाओं में गृह या परिवार आता है। अनौपचारिक संस्थाओं में विद्यालय। विद्यालय का सीधा सम्बन्ध जहां एक ओर शिक्षा प्रदान करने से है वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व से भी है। विद्यालय ही वह स्थान है जहां पहुँच कर बालक–बालिकाएं अपने पशुवत् प्रवृत्तियों का त्याग करता है तथा मानवीय वृत्तियों को अपनाता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा का महत्व अधिक होता है क्योंकि इस समय वह समाज में अपना स्थान बनाना प्रारंभ कर देता है और अपने भावी जीवन की योजनाएं बनाने लगता है इस प्रकार से माध्यमिक शिक्षा बालक के भूत, वर्तमान और भविष्य का आधार होती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थियों के विषय ज्ञान को बदलने में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन।
2. शारीरिक, मानसिक विकास के लिये शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयासों का अध्ययन।
3. विद्यार्थियों को शिक्षा और समाज के प्रति जागरुक बनाने में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन।

शोध परिकल्पना

परिकल्पना अनुसंधान कार्य की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। समस्याओं के चयन व परिमारणीकरण के उपरान्त साधारणतया तीसरा चरण परिकल्पनाओं का निर्धारण करने का होता है। इसे अनुसंधान कार्य की नीवं कहां जाता है। किसी भी शोधकर्त्ता के लिए परिकल्पनाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अभाव में कोई निश्चित एवं क्रमबद्ध प्रयत्न सम्भव नहीं है। अनुसंधान कार्य परिकल्पना के निर्माण एवं उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। परिकल्पना के अभाव में अनुसंधानकार्य उद्देश्यहीन हो जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैः–

शोध क्षेत्र के विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है।

अध्ययन का परिसीमनः

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र जिला इलाहाबाद है। इसके अन्तर्गत 7 तहसील – सोरांव, फूलपुर, हंडिया, बारा, करछना, मेजा एवं कोराव हैं।

न्यादर्श चयनः

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है जो निम्नानुसार है–

सारणी 1: न्यादर्श चयन

क्र.	तहसील	विद्यालय संख्या	छात्र संख्या
1.	सोरांव	04	40
2.	फूलपुर	04	40
3.	हंडिया	04	40
4.	बारा	04	40
5.	करछना	04	40
6.	मेजा	04	40
7.	कोराव	04	40
योग		28	280

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है जिले के सभी तहसीलों से 04–04 विद्यालय जिसमें 02 शहरी एवं 02 ग्रामीण विद्यालय कुल 28 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया। शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 10–10 विद्यार्थी कुल 280 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है।

शोध विधि :

साख्यिकीय विधि : सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेशण हेतु, सांख्यकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%) आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण :

शोधार्थी ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से आर्येन्दु, अखिलेश (2001)[1], अग्रवाल, रीना (2007)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], झा, शीतला एवं दुबे शैलजा (2016)[4], सिंह, शिव प्रकाश (2007)[5] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6] ने शोध विधि एवं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित कार्य किये है।

शोध क्षेत्र का परिचय :

उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में 98 मीटर (322 फीट) पर गंगा और यमुना नदियों के संगम पर स्थित है। यह क्षेत्र प्राचीन वत्स देश कहलाता था। इसके दक्षिण–पूर्व में बुंदेलखण्ड क्षेत्र है, उत्तर एवं उत्तर–पूर्व में अवध क्षेत्र एवं इसके पश्चिम में निचला दोआब क्षेत्र। प्रयागराज भौगोलिक एवं संस्कृतिक दृष्टि, दोनों से ही महत्वपूर्ण रहा है। गंगा–जमुनी दोआब क्षेत्र के खास भाग में स्थित ये यमुना नदी का अंतिम पड़ाव है। दोनों नदियों के बीच की दोआब भूमि शेष दोआब क्षेत्र की भाँति ही उपजाऊ किंतु कम नमी वाली है, जो गेंहू की खेती के लिये उपयुक्त होती है। जिले के गैर–दोआबी क्षेत्र, जो दक्षिणी एवं पूर्वी ओर स्थिति हैं, निकटवर्ती बुंदेलखंड एवं बघेलखंड के समान शुष्क एवं पथरीले हैं। भारत की नाभि जबलपुर से निकलने वाली भारतीय अक्षांश रेखा जबलपुर से 343 कि0मी0 (213 मील) उत्तर में इलाहाबाद से निकलती है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

सारणी 2: विद्यालय में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन का अध्ययन।

क्र.	तहसील	न्यादर्श में चयनित उत्तरदाताओं की संख्या	विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का प्रभाव					
			होता है		नही होता है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	सोरांव	40	25	62.50	10	25.00	05	12.50
2.	फूलपुर	40	22	55.00	11	27.50	07	17.50
3.	हंडिया	40	20	50.00	14	35.00	06	15.00
4.	बारा	40	23	57.50	10	25.00	07	17.50
5.	करछना	40	21	52.50	14	35.00	05	12.50
6.	मेजा	40	22	55.00	10	25.00	08	20.00
7.	कोराव	40	21	52.50	12	30.00	07	17.50
योग		280	154	55.00	81	28.93	45	16.07

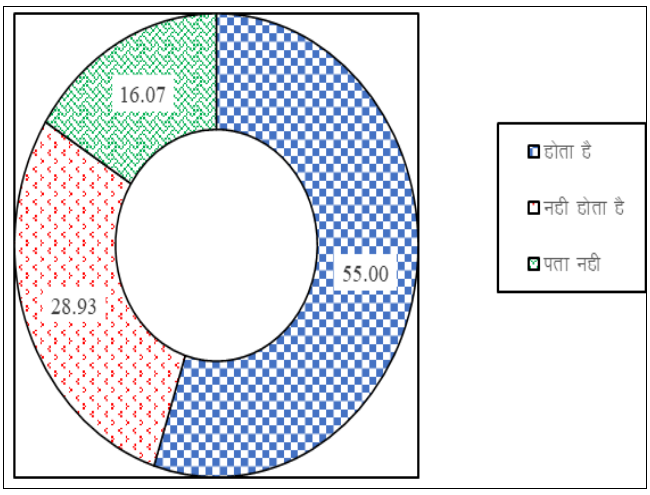

आरेख 1: विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का प्रभाव का आरेखीय निरूपण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित उत्तरदाताओं से प्रश्नावली पत्रक के माध्यम से शोध क्षेत्र में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास से संबंधित तथ्यों का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में चयनित 280 उत्तरदाताओं में से 55. 00 प्रतिशत मत है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है। इसी प्रकार 28.93 प्रतिशत का मत है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास नही होता है, जबकि 16.07 प्रतिशत मत है कि इस संबंध में पता नही है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का प्रभाव		
	होता है	नही होता है	पता नही
F_o	154	81	45
F_e	93.33	93.33	93.33
F_o-F_e	60.67	-12.33	-48.33
$(F_o-F_e)^2$	3680.44	152.11	2336.11
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	39.43	1.63	25.03

$$\chi^2 = \sum \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

$$\chi^2 = 66.09$$

विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोध क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 66.09 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास होता है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

वास्तव में अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के

आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान किया जाता है। अनुसंधान एक व्यवस्थित एवं सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम तथा प्रभावी बनाया जाता है। चौदह वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान संवैधानिक प्रावधान में से एक है। यदि घर के सदस्य शिक्षित है तो उस परिवार के बच्चों के विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, उन्हें उचित आहार प्रदान किया जाता है, शिक्षा का उत्तम वातावरण मिलता है जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि में योगदान प्रदान करता है।

सुझावः

- विद्यालयों में छात्रों के संपूर्ण शैक्षणिक विकास के लिए स्वास्थ्य एवं उत्साहपूर्वक वातावरण निर्मित किया जाए।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यालयों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने हेतु बालसभा का आयोजन किया जाना चाहिए।

सन्दर्भः

1. आर्येन्दु, अखिलेश – सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001.
2. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2003.
4. झा, शीतला एवं दुबे शैलजा – मध्याह्न भोजन कार्यक्रम व स्व सहायता समूह के कार्य निष्पादन पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, Research Expo International Multidisciplinary Research Journal. 2016;6(1):59-64.
5. सिंह, शिव प्रकाश – भारत में 'सभी के लिये शिक्षा' अभियानः मिथक या वास्तविकता, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, 2007; आगरा, पृ0 1878–1879।
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसारः दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.